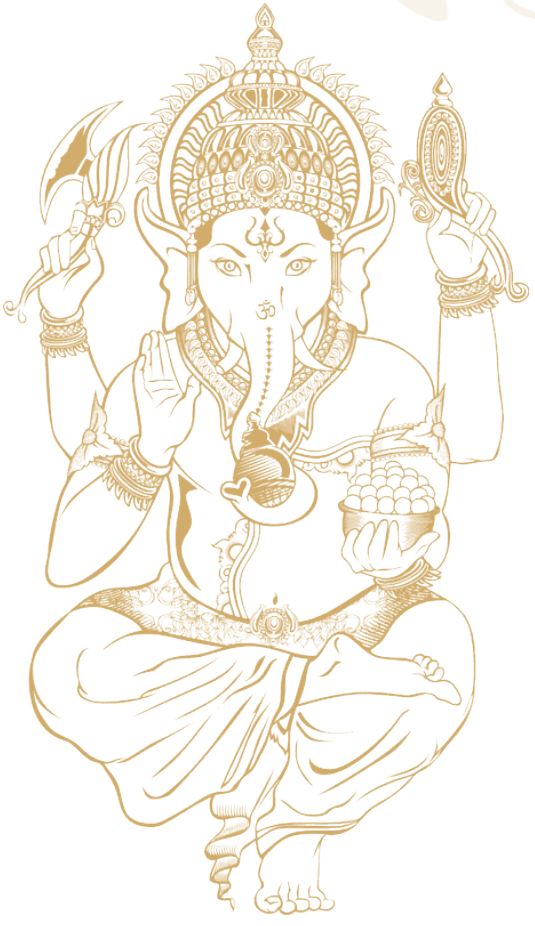

Baby girl

24 Sep 2025

10:56 AM

Bhopal

Model: Baby-Horoscope **Order No: 119545301**

तिथि 24/09/2025 **समय** 10:56:00 **वार** बुधवार **स्थान** Bhopal **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:03
अक्षांश 23:17:00 उत्तर **रेखांश** 77:28:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:20:08 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	10:49:05 घं
वेलान्तर	00:07:58 घं
सूर्योदय	06:09:34 घं
सूर्यास्त	18:14:17 घं
चैत्रादि संवत	2082
शक संवत	1947
मास	आश्विन
पक्ष	शुक्ल
तिथि	3
नक्षत्र	चित्रा
योग	ऐन्द्र
करण	तैतिल

अवकहड़ा चक्र

गण	राक्षस
योनि	व्याघ्र
नाड़ी	मध्य
वर्ण	शूद्र
वश्य	मानव
वर्ग	मृग
युँजा	मध्य
हंसक	वायु
जन्म नामाक्षर	री-रीतिका
पाया(रा.-न.)	लौह-रजत
होरा	मंगल
चौघड़िया	शुभ

विंशोत्तरी

मंगल 1वर्ष 4मा 23दि

मंगल

24/09/2025
17/02/2027

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	24/09/2025
शुक्र	13/03/2026
सूर्य	19/07/2026
चन्द्र	17/02/2027

योगिनी

मंगला 0वर्ष 2मा 12दि

मंगला

24/09/2025
06/12/2025

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	24/09/2025
संकटा	06/12/2025

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			10:28:07	वृश्चि	अनुराधा	3	शनि	सूर्य	---	0:00			
सूर्य			07:12:55	कन्या	उ०फाल्गुनी	4	सूर्य	केतु	सम राशि	1.62	मातृ	पितृ	मित्र
चंद्र			04:00:08	तुला	चित्रा	4	मंगल	शुक्र	सम राशि	0.95	कलत्र	मातृ	जन्म
मंगल			07:03:32	तुला	स्वाति	1	राहु	राहु	सम राशि	1.31	पुत्र	भ्रातृ	सम्पत
बुध		अ	15:52:33	कन्या	हस्त	2	चंद्र	शनि	मूलत्रिकोण	1.27	अमात्य	ज्ञाति	अतिमित्र
गुरु			27:22:00	मिथु	पुनर्वसु	3	गुरु	शुक्र	शत्रु राशि	1.15	आत्मा	धन	विपत
शुक्र			11:31:55	सिंह	मघा	4	केतु	बुध	शत्रु राशि	1.06	भ्रातृ	कलत्र	साधक
शनि	व		04:03:37	मीन	उ०भाद्रपद	1	शनि	शनि	सम राशि	1.03	ज्ञाति	आयु	क्षेम
राहु	व		24:06:37	कुंभ	पू०भाद्रपद	2	गुरु	बुध	मित्र राशि		---	ज्ञान	विपत
केतु	व		24:06:37	सिंह	पू०फाल्गुनी	4	शुक्र	बुध	शत्रु राशि		---	मोक्ष	वध

लग्न-चलित

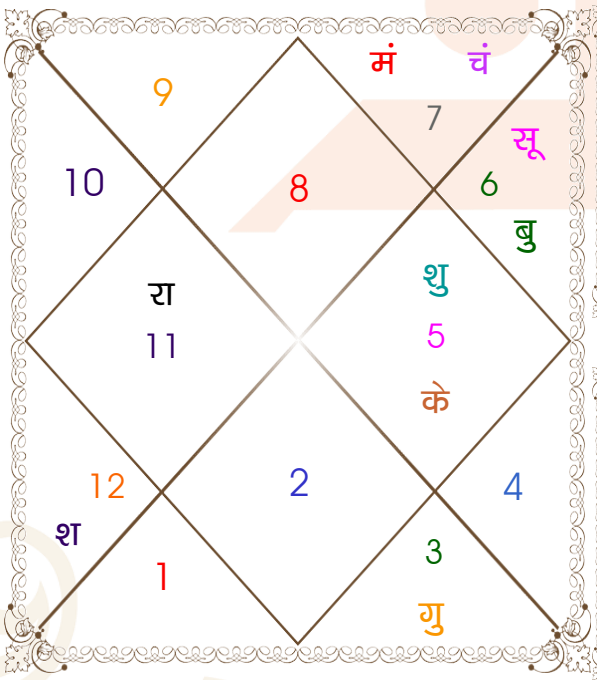

चन्द्र कुंडली

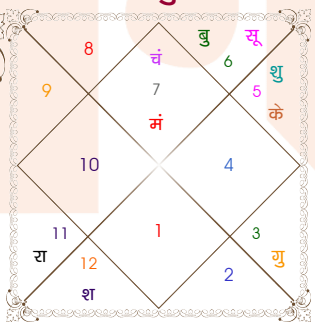

नवमांश कुंडली

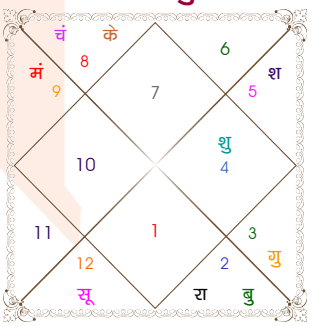

सर्वाष्टकवर्ग

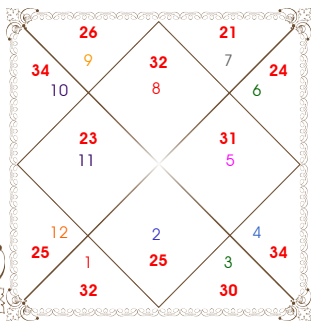

दशमांश कुंडली

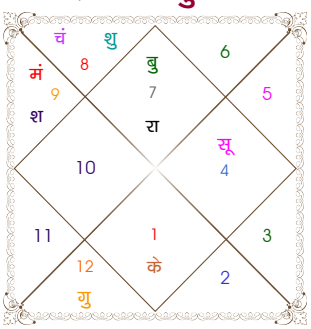

Shree Shree 1008 Mahamandleshwar Paramhans Daati Maharaj
Shri Sidh Shakti Peeth Shanidham Trust
Shree Shani Tirth Kshetra Asola, Fatehpur Beri, Chhatterpur, New Delhi 110074

+919871964972, +91981539237, +919116141210, +919116141211
www.shanidham.org, www.facebook.com/shreeshanidham, www.daati.com
Saturnpublicatins@gmail.com

नक्षत्रफल

आप चित्रा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपकी जन्मराशि तुला तथा राशिस्वामी शुक्र होगा। नक्षत्रानुसार आपकी नाड़ी मध्य, वर्ण शूद्र, वर्ग मृग, गण राक्षस तथा योनि व्याघ्र होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का आधाक्षर "रि" या "री" से प्रारम्भ होगा। यथा रीना, रीता ।

आप स्वभाव से ही धर्म में विशवास करने वाली होंगी अतः ब्राहमण तथा देवताओं को श्रद्धा पूर्वक भक्ति तथा आदर प्रदान करेंगी। इनके प्रति आपके मन में असीम श्रद्धा का भाव सर्वदा विद्यमान रहेगा। आप अपने परिवार सहित हमेशा सन्तोषी वृति का पालन करेंगी तथा जितना भी उपलब्ध होगा उसी में प्रसन्नता का अनुभव करेंगी। अनावश्यक इच्छाएं तथा आवश्यकताओं की आप यत्नपूर्वक उपेक्षा करेंगी। साथ ही ऐश्वर्य एवं धनधान्यादि से आप आजीवन परिपूर्ण रहेंगी तथा कभी भी इनकी अल्पता का आपको आभास नहीं होगा एवं सुख पूर्वक आप इनका उपभोग करेंगी।

पुत्रदारयुतसंतुष्टो धनधान्य समन्वितः।
देव ब्राह्मण भक्तश्च चित्रायां जायते नरः।।
मानसागरी

अर्थात चित्रा नक्षत्र में उत्पन्न जातक स्त्री तथा पुत्र सहित सन्तुष्ट रहने वाला, धनधान्यादि से परिपूर्ण रहने वाला तथा देवता एवं ब्राह्मणों का भक्त होता है।

विचित्र वेशभूषा धारण करने के लिए आप हृदय से लालायित रहेंगी तथा उसको धारण भी करेंगी। साथ ही गले में हार के प्रति भी आप उत्सुक रहेंगी तथा उसको भी सुरूचिपूर्ण ढंग से पहनेंगी। आपकी आखें तथा शारीरिक सौन्दर्य अत्यन्त ही सुन्दर एवं मनोहरी होगा।

चित्राम्बर माल्यधरः सुलोचनाङ्गश्च भवति चित्रायाम्।।
बृहज्जातकम्

अर्थात् चित्रा नक्षत्र में उत्पन्न जातक अनेक वस्त्र एवं मालाओं को धारण करने वाला, सुन्दर नेत्र तथा सुन्दर शरीर वाला होता है।

आप अपने हृदय की गुप्त बातों को हमेशा अपने हृदय में ही रखने में सफलता प्राप्त करेंगी तथा किसी अन्य को उसके बारे में कभी भी कोई भेद नहीं देंगी। यह प्रवृति आपकी स्वभाव से ही होगी तथा आजीवन आप यत्नपूर्वक अपनी इस प्रवृति का पालन करेंगी। समाज से आपको पूर्ण मान सम्मान तथा आदर की प्राप्ति होगी तथा आप भी समाज के सभी वर्गो के लोगों के साथ समान रूप से स्नेह तथा सहयोग का व्यवहार करेंगी। परपुरूषवर्ग से भी आपके घनिष्ठ संबंध रहेंगे तथा उनके प्रति पूर्ण अनुराग की भावना का भी प्रदर्शन करेंगी।

चित्रायामति गुप्तशीलनिरतो मानी परस्त्रीरतः।।

जातकपरिजातः

अर्थात चित्रा नक्षत्र में उत्पन्न जातक अपने मन की बात को गुप्त रखने वाला तथा दूसरे पर प्रकट न करने वाला ऐसे स्वभाव से युक्त, सम्माननीय तथा दूसरे की स्त्रियों में अनुरक्त रहता है।

आप अत्यन्त ही साहसी एवं पराक्रमी महिला होंगी तथा अपनी शक्ति एवं पराक्रम के बल से शत्रु को अत्यन्त ही कष्ट प्रदान करेंगी आपकी शक्ति से भयभीत शत्रु आपका विरोध करने में कभी भी सफल नहीं होंगे। नीति शास्त्र की आप एक श्रेष्ठ विदुषी होगी तथा नीति संबंधी कार्यो को आप निपुणता के साथ सम्पन्न करेंगी। साथ ही शास्त्र ज्ञान में भी आप अपनी बुद्धि का परिचय देंगी।

प्रतापसन्तापितशत्रुपक्षो नयेळतिदक्ष विचित्रवासः।
प्रसूतिकाले यदि यस्य चित्रा बुद्धिविचित्रा खलुतस्य शास्त्रे।।
जातकाभरणम्

अर्थात् चित्रा नक्षत्र में उत्पन्न मानव अपने प्रताप के द्वारा शत्रु को कष्ट पहुँचाने वाला, नीति शास्त्र में दक्ष, नाना प्रकार के वस्त्रों को धारण करने वाला तथा शास्त्रादि में अद्भुत बुद्धिवाला होता है।

आप लौहपाद में पैदा हुई हैं। यद्यपि लौहपाद में उत्पन्न जातक जीवन में विभिन्न प्रकार से रोगी, दुःखी, धन एवं सुखसंसाधनों से हीन रहकर जीवन यापन करता है परन्तु आपकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा शुभ राशि में स्थित है। अतः आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फलों की ही प्राप्ति अधिक मात्रा में होगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा सामान्य जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा। आप एक दानशील प्रवृति की महिला होंगी तथा नित्य प्रति अपनी इस प्रवृति का अनुपालन करती रहेंगी। आप हमेशा सद्गुणों से सुसम्पन्न रहेंगी जिससे अन्य लोग आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। आप शुभ एवं अच्छे कार्यो में अधिक व्यय करेंगी अनावश्यक या गलत कार्यो पर आप कभी भी व्यय नहीं करेंगी। इसके अतिरिक्त जीवन में विभिन्न प्रकार के भौतिक सुखसंसाधनों तथा विलासमय वस्तुओं से आप सुसम्पन्न रहेंगी तथा आनन्द पूर्वक इनका उपभोग करेंगी।

तुला राशि में उत्पन्न होने के कारण आप शरीर तथा चेहरे से सुन्दर होंगी आपकी आखें बड़ी तथा नाक ऊंची रहेगी। वाहनों से आप हमेशा सुशोभित रहेंगी तथा इनकी संख्या भी आपके पास प्रचुर मात्रा में रहेगी। आपका सामाजिक क्षेत्र विस्तृत होगा अतः अन्य पुरूषवर्ग से आपके मित्रतापूर्ण घनिष्ठ संबंध रहेंगे। वाहन के अतिरिक्त भूमि आदि जायदाद से भी आप लाभान्वित होंगी। आप एक पराक्रमी महिला होंगी तथा समाज में आपका पूर्ण प्रभाव रहेगा। समाज के सभी लोग आपको यथोचित आदर तथा सम्मान प्रदान करेंगे। अतुल धनैश्वर्य एवं वैभव से आप हमेशा युक्त रहेंगी। कार्यो को सम्पन्न करने में आप निपुण रहेंगी। देवता तथा ब्राहमणों के प्रति आपके मन में गहन श्रद्धा भाव रहेगा तथा श्रद्धापूर्वक आप इसका पूजन तथा

सत्कार करेंगी। पति को वश में करने की कला में आप अति दक्ष होंगी तथा आपकी आज्ञा के बिना वह कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करेंगे। धनधान्यादि संग्रह की प्रवृति से आप युक्त रहेंगी तथा बंधु वर्ग की भलाई करने में भी प्रयत्नशील रहेंगी।

उन्नासो व्यायताक्षः कृशवदनतनुर्भूरिदारो वृषाढ्यो।
गो भूम्यः शौचकरो वृषसमवृषणो विक्रमज्ञः क्रियेशः।।
भक्तो देवद्विजानां बहुविभवयुतः स्त्रीजितो हीनदेहो।
धान्यादानैकबुद्धिस्तुलिनि शशधरे बन्धुवर्गोपकारी।।
सारावली

आप भद्रजनों तथा समाज की आदरपूर्वक सेवा करने में हमेशा तत्पर रहेंगी। आप एक विदुषी तथा बुद्धिमान महिला होंगी तथा शुद्धता से युक्त रहकर जीवन व्यतीत करेंगी। घूमने तथा यात्रा करने का आपका प्रिय शौक रहेगा तथा अपने अधिकांश समय को भ्रमण तथा यात्रा में ही व्यतीत करेंगी । आप वस्तुओं के क्रय विक्रय में अत्यन्त दक्ष होंगी तथा व्यापार के मार्ग में भी उन्नति करेंगी। आप अपने समस्त रिश्तेदारों तथा बन्धुओं की यत्नपूर्वक सेवा तथा सहायता करेंगी परन्तु बाद में इन्ही लोगों के द्वारा उपेक्षित भी होना पड़ेगा।

देवब्राहमणसाधुपूजनरतः प्राज्ञः शुचिः स्त्रीजितः।
प्रांशुश्चोन्नतनासिका कृशचलदगात्रो डटनोडर्थान्वितः।।
हीनाङ्गः क्रयविक्रयेषु कुशलो देवद्विनामा सरूक्।
बन्धूनामुपकारकृद्वि रूषतस्त्यक्तस्तु तैः सप्तमे।।
बृहज्जातकम्

धैर्य से आप युक्त रहेंगी तथा अपने समस्त कार्यों को धैर्य पूर्वक ही सम्पन्न करेंगी। आप एक न्याय प्रिय महिला भी होंगी तथा इस पर आपकी पूर्ण आस्था रहेगी। आपकी इस आस्था को देखते हुए लोग अपने आपसी विवादों में आपको पंच या मध्यस्थ नियुक्त करेंगे। जिसका आप ईमानदारी से पालन करेंगी। इसके अतिरिक्त आपकी संतति संख्या भी अल्प रहेगी एवं भाग्योदय भी विलम्ब से ही होगा।

चलत्कृशाङ्गो डुतोडतभक्तो देवद्विजानामटनोद्विनामा।
प्रांशुश्च दक्षः क्रयविक्रयेषु धीरो डदयस्तौलिनि मध्यवादी।।
फलदीपिका

आपका शारीरिक कद मध्यम रहेगा। सरकार के उच्चाधिकारियों तथा पदाधिकारियों को प्रसन्न करने की कला में आप अत्यन्त चतुर होंगी तथा इनसे आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। आप अपने बन्धु बांधवों को हमेशा कुछ न कुछ अवश्य देती रहेंगी। आप कभी कभी अनावश्यक रूप से अधिक वार्तालाप भी करेंगी। ज्योतिष अथवा खगोल शास्त्र की आप विदुषी होंगी तथा इनके विषय में आपको अच्छा ज्ञान रहेगा। साथ ही बंधुवर्ग तथा नौकरों के प्रति भी आपके मन में अनुराग की भावना विद्यमान रहेगी।

भवति शिथिलगात्रो नातिदीर्घो न खर्वी।

जनपति परितोषी बान्धवेभ्यः प्रदाता।।
अतिशय बहुभाषी ज्योतिषां ज्ञान युक्तो।
भवति सः तुलाराशि बन्धुभृत्यानुरागी।।
जातक दीपिका

आप कई बार कुअवसर पर अपना क्रोध प्रकट करेंगी जिससे आप दुःखी रहेंगी। आप अत्यन्त ही प्रिय एवं मधुर वाणी का अपने सम्भाषण में प्रयोग करेंगी। अतः सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे आपके हृदय में दया एवं करूणा की भावना भी हमेशा विद्यमान रहेगी आपके नेत्र भी चंचलता से युक्त रहेंगे। आपकी आर्थिक स्थिति में कई प्रकार के उतार चढ़ाव आते रहेंगे कभी तो यह अति उत्तमता को प्राप्त होगी तथा कभी एक दम ही भिन्न। अतः आथिक क्षेत्र में आप प्रायः संघर्ष शील ही रहेंगी। आप घर में अत्यन्त बलवती होंगी परन्तु घर से बाहर एकदम निर्बलता की अनुभूति करेंगी। व्यापारिक कार्यों में आप तत्पर रहेंगी तथा मित्रवर्ग से आपका विशेष लगाव रहेगा। इसके अतिरिक्त आप विदेश में भी निवास कर सकती हैं।

अस्थानरोषणो दुःखी मृदुभाषी कृपान्वितः।
चलाक्षश्चललक्ष्मीको गृहमध्येळति विक्रमः।।
वाणिज्य दक्षो देवानां पूजको मित्रवत्सलः।
प्रवासी सुहृदयमिष्टस्तुला जातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

सर्वप्रकार के वाहनसुख से आप सम्पूर्ण जीवन में युक्त रहेंगी तथा हमेशा दानशीलता के भाव से सुशोभित रहेंगी। पुरूषवर्ग से आपके घनिष्ठ संबंध रहेगे तथा विपुल धन वैभव से आप सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगी।

वृषतुरंग विक्रमविक्रमनद्विजसुरार्चनदानमना पुभान्।
शशिनि तौलिगते बहुदारभाग्विभवसंभव संचित विक्रमः।।
जातकाभरणम्

राक्षस गण में जन्म होने कारण आप अधिक बातों को बोलने वाली होंगी। आपके मन में करूणा के भाव की अल्पता रहेगी। आप एक साहसी महिला होंगी तथा साहसिक कार्य करने के लिए हमेशा उत्सुक रहेंगी। आप छोटी छोटी बातों में शीघ्र ही उत्तेजित तथा क्रोधित भी होंगी। अपने कार्यों को सफल बनाने में आप सर्वदा तत्पर रहेंगी। कभी कभी समाज में अधिकांश लोगों से आप वाद विवाद में उलझती रहेंगी तथा उनसे आपका प्रायः शत्रुता का भाव रहेगा। अतः यत्नपूर्वक अपने सम्भाषण में मधुर शब्दों का ही प्रयोग करें।

आप उन्माद तथा प्रमेह रोग से भी अपने जीवन काल में पीडित हो सकती हैं। आपकी आकृति भी विशेष सुन्दर नहीं होगी तथा अपने सम्भाषण में आप कभी कभी अत्यन्त ही कटु भाषा का प्रयोग करेंगी जिससे सुनने वाले कष्ट की अनुभूति करेंगे।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।

दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगड़ू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

व्याघ्र योनि में उत्पन्न होने के कारण आपकी प्रकृति स्वतंत्रता प्रिय होगी तथा आप अपने समस्त कार्य कलापो को स्वेच्छा तथा स्वच्छन्दता से करना पसन्द करेंगी अन्य जनों का हस्तक्षेप या सलाह आपको रूचिकर नहीं लगेगी। धन धान्यादि का संग्रह करने में भी आप रूचिशील रहेंगी तथा यत्नपूर्वक इसका संग्रह कर सकेंगी। अच्छे गुणों को धारण करने की आपमें असाधारण शक्ति होगी साथ ही आप अपने कार्यक्षेत्र में प्रशिक्षित तथा विशेषज्ञा होंगी अतः आप पूर्ण मान सम्मान की अधिकारिणी होंगी। धनैश्वर्य तथा वैभव से आप हमेशा सुसम्पन्न रहेंगी तथा सुखपूर्वक इसका उपभोग करेंगी लेकिन आप अपने ही मुख से अपनी प्रशंसा करेंगी। अतः अन्य जनों पर इसका विपरीत प्रभाव पड़ेगा।

स्वच्छन्दोऽर्थरतो ग्राही दीक्षावान सः विभुः सदा।
आत्मस्तुतिपरो नित्यं व्याघ्रयोनि भवो नरः।।
मानसागरी

अर्थात् व्याघ्र योनि में उत्पन्न जातक स्वतंत्र प्रवृति वाला, अर्थसंग्रह में तत्पर, गुणों को ग्रहण करने वाला, दीक्षित, वैभव युक्त तथा अपने ही मुख से स्वयं अपनी प्रशंसा करने वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा द्वादश भाव में है। अतः आपकी माता का शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति करती रहेंगी। आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव भी विद्यमान रहेगा। साथ ही जीवन के सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग तथा निर्देश देती रहेंगी। दान पुण्य संबंधी कार्य में भी आप उन्हीं का अनुसरण करेंगी।

आपका भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं प्रायः उनकी आज्ञा का पालन करती रहेंगी परन्तु आपके परस्पर संबंध विशेष मधुर नहीं रहेंगे तथा यदा कदा किसी न किसी बात पर विवाद होता रहेगा परन्तु ये सामान्य मतभेद स्वतः समाप्त हो जाएंगे एवं सामान्य संबंध बने रहेंगे। समय ही उन्हें हमेशा अपना वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए भी आप तत्पर रहेंगी।

आपके जन्म काल में सूर्य एकादश भाव में स्थित है अतः पिता की आप हमेशा प्रिय रहेंगी। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा लेकिन समय समय पर मध्यम रूप से वे शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं इसका उनके पास अभाव नहीं रहेगा। साथ ही जीवन में आपको हर प्रकार से अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपके आय स्रोतों की वृद्धि करने एवं उनमें उन्नति प्राप्त करने के लिए वे आपको

पूर्ण आर्थिक सहयोग तथा निर्देश भी प्रदान करते रहेंगे।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रखेंगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध अच्छे होंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी विद्यमान रहेंगे। जीवन में आप उनको पूर्ण सहयोग प्रदान करती रहेगी एवं सुख दुःख में उनकी सेवा भी करती रहेंगी।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति द्वादश भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य विशेष अच्छा नहीं रहेगा एवं समय समय पर शारीरिक दुर्बलता की अनुभूति करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा आपके प्रति उनके मन में सम्मान तथा स्नेह का भाव रहेगा। जीवन में उनसे आप पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य क्षेत्र में वांछित सहयोग प्राप्त करने में भी सफल रहेंगी। साथ ही सुख दुःख में भी आपको उनसे पूर्ण सहानुभूति तथा वांछित सहायता प्राप्त होगी।

आपके मन में भी उनके प्रति स्नेह एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा तथा आपसी संबंध भी मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों के कारण संबंधों में कटुता या तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह कुछ समय तक रहेगी। इसके साथ ही आप सुख दुःख में उन्हें अपनी ओर से पूर्ण सहायता प्रदान करती रहेंगी।

आपके लिए माघ मास, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी तिथियां, शतभिषा नक्षत्र, शुक्ल योग, तैतिलकरण,गुरूवार चतुर्थ प्रहर तथा मीनराशिस्थ चन्द्रमा अशुभ फल देने वाले होंगे। अतः आप 15 जनवरी से 14 फरवरी के मध्य 4,9,14 तिथियों, शतमिषा नक्षत्र, शुक्ल योग तथा तैतिलकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रय आदि अन्य महत्वपूर्ण कार्यो को प्रारम्भ न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक मात्रा में होगी। साथ ही गुरूवार, चतुर्थ प्रहर तथा मीन राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य के प्रति भी सावधान रहना चाहिए।

यदि आपके लिए समय ठीक न चल रहा हो मानसिक अशान्ति, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में असफलता आदि अशुभ फल हो रहे हों तो ऐसे समय में आपको अपनी इष्ट देवी लक्ष्मी की उपासना करनी चाहिए तथा शुक्रवार के उपवास भी रखने चाहिए। इसके साथ ही सोना, हीरा, चावल, श्वेत वस्त्र, श्वेत चन्दन इत्यादि पदार्थो का श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए ऐसा करने से आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फलों में भी कमी होगी। इसके अतिरिक्त शुक्र के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 20000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपके लाभमार्ग प्रशस्त होंगे तथा अन्य शुभ कार्यों में भी सफलता प्राप्त होगी।

ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।
मंत्र- ऊँ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः।